आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 1/अंक 2/दिसंबर 2021
Received : 30\11\2021;Accepted:08\12\2021;Published:24\12\2021

मधु काँकरिया के 'पत्ताखोर' उपन्यास में मानवीय संवेदना

डॉ.देवकी प्रसन्ना.जी.एस.
आल्वास कॉलेज, मूडुबिदिरे
मोबाइल नंबर-9743083937
ई मेल- devakiprasannaga@gmail.com

डॉ.देवकी प्रसन्ना.जी.एस. ,**मधु काँकरिया के 'पत्ताखोर' उपन्यास में मानवीय संवेदना**,आखर हिंदी पत्रिका, खंड 1/अंक /2दिसंबर ,2021(117-120)

सृष्टि में जितनी वस्तुएँ हैं, उन सभी में संवेदनाएँ रहती हैं। चाहे वह जड़ पत्थर ही क्यों न हो? शायद उसमें भी संवेदनाएँ होंगी। लेकिन हम समझ नहीं सकते। इस सृष्टि में जितनी जीवधारियाँ हैं उन सभी में संवेदनाएँ हैं। पेड़ पौधों में भी संवेदनाएँ हैं, पर वे प्रकट नहीं कर सकते। पशु-पक्षियों में तो संवेदनाएँ है ही। हम उन्हें प्यार करने पर वे भी हमें प्यार करते हैं। परन्तु प्रकट करने का ढंग मात्र अलग है। मानव दूसरों की भावनाओं को समझ सकता है क्योंकि मानव एक संवेदनशील प्राणी है। मानव के सभी प्रकार के ज्ञान का आधार संवेदना ही है। बच्चे के जन्म समय से ही उसमें संवेदना-शक्ति आ जाती है। मानव में आवेग के कारण से संवेदना पैदा होती है। कई बार बाह्य तत्वों के कारण आवेग पैदा होता है जो कई बार आंतरिक विचारों से प्रकट होता है। 'पत्ताखोर' सन् २००५ई. में राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित मधु काँकरिया का उपन्यास है। इस उपन्यास में मानवीय संवेदना को प्रस्तुत करना चाहती हूँ।

सामाजिक संवेदना:

'पत्ताखोर' उपन्यास का केन्द्र नशे का शिकार युवक है। नशा आज भारतीय समाज की बहुत बड़ी समस्या है। आजकल के युवक-युवतियाँ कुछ कारण से नशे का शिकार होते हैं। आज के उत्तर आधुनिकता ने

एक ओर बहुत अच्छी, सुन्दर जिन्दगी दी है, वहीं दूसरी ओर अनेक समस्याएँ, तनाव, कुंठा, अतृप्ति और असंतोष ने मनुष्य की जिन्दगी को बुरी तरह व्याप्त किया है।

'पत्ताखोर' उपन्यास में नशाखोरी में फँसे हुए एक युवक के जीवन का वर्णन किया ग्या है। 'पत्ता' का मतलब एक पुड़िया हेरोइन तथा उसका सेवन करनेवाले को 'पत्ताखोर' कहते हैं। उपन्यास का मुख्य पात्र आदित्य है। आदित्य संवेदनशील युवक है। उसकी संवेदनशीलता के बारे में उसके पिता हेमंत बाबू जानते थे, पर उसकी माँ वनश्री इस ओर ध्यान नहीं देती थी। आदित्य को बचपन से संगीत से लगाव था। संगीत से उसे सुखात्मक संवेदना मिलती थी। इसलिए वह संगीत के द्वारा जीवन के संतोष को खोजता रहता है क्योंकि माँ तथा बाप दोनों नौकरी करने के कारण से उन्हें आदित्य की ओर ध्यान देने के लिए समय नहीं था। फलतः स्कूल में वह पढ़ाई में पीछे रहने लगा। सिर्फ सोलह साल की उम्र में धूम्रपान करते वक्त पिता उसे देखते हैं और उपदेश देकर छोड़ देते हैं। इस किशोरावस्था में ही लड़के बुरी आदतों के शिकार बनते हैं। इस उम्र मे बच्चों के हृदय बहुत कोमल रहते हैं, इसलिए बहुत जल्दी संवेदनशील हो जाते हैं। अच्छाई और बुराई के अंतर बहुत जल्दी नहीं समझ सकते हैं। दूसरों की बातों की ओर बहुत जल्दी आकर्षित हो जाते हैं। इस प्रकार जिंदगी बरबाद कर देते हैं। इन सब कारणों से वह बारहवीं की परीक्षा में असफल हो जाता है। इसलिए घर से भाग जाता है तथा पुरी के एक होटल में नौकरी करने लगता है। वही उसे हेरोइन का नशा करने की आदत लग जाती है। वहाँ से घर लौटने पर इसे छोड़ देता है, पर माँ और बाप के झगड़े से आदित्य पर प्रभाव पड़ता है वह अपनी हताश, निराश, जिन्दगी की बोरियत एवं भविष्यहीनता से लड़ने के लिए वापस नशे का सहारा लेता है। यहाँ आदित्य बहुत संवेदनशील व्यक्ति है। इसलिए माँ-बाप का झगड़ा भी सह नहीं सकता है। आजकल किशोरावस्था में बच्चे बहुत जल्दी नशे का शिकार बन जाते हैं। कारण माँ-बाप का झगड़ा हो, माँ-बाप का अलगाव हो, अकेलापन हो, बुरे दोस्तों का संग हो, कुछ भी हो हमारे समाज में यह मामूली विषय हो गया है। लेकिन इसकी जिम्मेदारी समाज ही है। किशोरावस्था के बच्चों की ओर ध्यान देना हमारा कर्तव्य है।

रागात्मक संवेदना:

"मानव हृदय के राग-विराग, हर्ष-द्वेष, प्रेम-प्रतिहिंसा आदि नाना भावों को अपनी रचना में समूर्त करना साहित्यकार की रागात्मक संवेदना है। लौकिक और अलौकिक जगत से संबद्ध अपने विचारों को जब वह अंतर के समूचे भावोद्वेग से सिंचित कर प्रस्तुत करता है, तभी रागात्मक संवेदना तीव्रतर होती है।"[1] रागात्मक संवेदना में प्रेमपरक संवेदना और करूणापरक संवेदना को महत्वपूर्ण माना गया है। प्रेम और करूणा जीवन के दो मुख्य पहलू हैं। इसके बिना मानव की संवेदना क्षीण बन जाता है। प्रस्तुत उपन्यास में आदित्य की प्रियतमा राशि आदित्य से बहुत प्यार करती है। आदित्य नशे का शिकार बनने पर भी उसे नहीं छोड़ती है। अंत में

आदित्य हेरोइन छोड़कर मोहनबाग लेन के झुग्गियों में सेवा करने लगता है। राशि की ओर ध्यान नहीं देता है। फिर भी राशि अविवाहित्य रहती है तथा उसकी प्रतीक्षा करती है।

सुखात्मक संवेदना:

आदित्य ठीक होकर लौटता है। घर आते ही पिता उसे सिन्थेसाइज़र भेंट देते हैं। वह अपने जीवन के आनंद को खोजने लगता है। कविताएँ, संगीत उसके जीवन के प्रमुख अंग बन जाते हैं। साथ-साथ मन लगाकर पढ़ाई करने लगता है। कॉलेज के एक कार्यक्रम में नृत्यांगना राशि से आदित्य प्रभावित होता है दोनों एक दूसरे से प्रेम करने लगते हैं। आदित्य का जीवन अब प्रेममय हो जाता है।

दुःखात्मक संवेदना:

आदित्य पहले हफ्ते में एक बार नशा लेता था। लेकिन अब २-३ दिन में नशा लेने लगता है। अपने हताश एवं निराश जीवन को बोरियत एवं भविष्यहीनता से लड़ने के लिए वह वही रास्ता चुनता है। उसकी चेतना में सिर्फ नशा ही नशा है। दो-चार दिनों में ही अदम्य, दुर्दांत तलब के कारण वहविद्ड्रायल की स्थिति में आ जाता है। इस स्थिति में एक सुबह उसका शरीर बुरी तरह ऐंठने लगा, जीभ तालू से चिपक गई, आँखों से, नाक से पान गिरने लगा, शरीर के भीतर हल्की कँपकँपी होने लगी। अब उसे नशा खुशी के लिए नहीं बल्कि जानलेवा यातना से मुक्ति पाने के लिए चाहिए था। नशे के अभ्यस्त व्यक्ति को रूटिन डोज़ के अभाव में होनेवाली यह शारीरिक यंत्रणा सिर्फ एक पत्ता (एक ग्राम हेरॉइन का आठवाँ भाग) पाने के लिए जानलेवा दर्द देता है। इस स्थिति में आदित्य सोचता है- "कैसा सर्वनाशी चक्रव्यूह..... पीड़ा का कारण भी वही और उपाय भी वही।"[2] अर्थात् वह नशा चक्रव्यूह जैसा है। एक बार भीतर जाने से बाहर आना बहुत मुश्किल है। पहले मस्ती के लिए लेते हैं। लेकिन बाद में विद्ड्रायल की स्थिति से बाहर आने के लिए भी लेना पड़ता है। आज के युवा वर्ग परिणाम सोचे बिना इस प्रकार की आदतों में पड़कर जीवन बरबाद कर रहे हैं।

पारिवारिक संवेदना:

पहले आदित्य हफ्ते में एक बार हेरॉइन लेता था, बाद में हफ्ते में ३-४ बार हो गया। अब नहीं लेने पर प्राणलेवा यातना होती है। इससे बचने के लिए नशा लेना पड़ता है। मज़ाक में शुरू करनेवाली आदतें प्राण लेने तक आ जाती हैं। उसकी देखभाल करने के लिए माँ नौकरी छोड़ती है। बेटेकी भलाई के लिए भगवान से प्रार्थना करती है। उसके बाप उसे रिहेबिलिटेशन सेंटर में भर्ती करवाते हैं। घर में आर्थिक समस्याएँ रहने पर भी पुत्र के भविष्य के लिए माता-पिता सब कुछ त्याग करने के लिए तैयार रहते हैं।

आर्थिक संवेदना:

आदित्य को नर्सिंग होम में इलाज करने के लिए हर दिन एक सौ अस्सी रूपये खर्च होता है। अट्ठाईस दिनों के बाद उसको अंतराग्राम रिहेबिलिटेशन सेंटर में आगे के इलाज के लिए जाना पड़ता है। संपूर्ण चार महीनों तक स्पिरिचुएल ट्रेनिंग देकर उसे मानसिक रूप से सबल बनाने का प्रयत्न किया जाता है। इसके लिए बारह हज़ार रूपये खर्च होता है। घर की आर्थिक स्थिति बिगड़ने पर भी हेमंत बाबू पीछे नहीं हटते। आदित्य के साथ हेमंत बाबू भी इस सेंटर में पहुँचे। वे आदित्य को ठीक करने की कोशिश करते हैं। उन्हें बेटे के जीवन के सामने रूपया गौण हो जाता है।

करूणापरक संवेदना:

अचानक चार महीनों तक राशि और आदित्य की मुलाकात नहीं हो सकती है। इसलिए आदित्य उसके घर जाता है। उस वक्त पता चलता है कि उसकी माँ कैंसर से पीड़ित है। ज्यादा से ज्यादा साल भर जी सकती है। उसकी माँ राशि और बहन श्यामली के बारे में चिंतित थी। आदित्य अभी तक नहीं कमाता था। उसकी जिम्मेदारी उठा नहीं सकता था। इसलिए राशि आदित्य को माँ के सामने नहीं ले जा सकी। राशी माँ की बीमारी में उलझी हुई थी। आदित्य अपने को राशि के लायक बनाने के लिए कॉंपिटेटिव टेस्ट की तैयारियाँ करता है। तभी शादी का निमंत्रण पत्र आता है। उसमें राशि के पिता दीपंकर बनर्जी का नाम पढ़कर वह क्रोध से बिना पढ़े कार्ड को फाड़ देता है। उसे यह गलतफहमी होती है कि राशि दूसरे लड़के के साथ शादी कर रही है। इस गलतफहमी के कारण दोनों का जीवन बरबाद हो जाता है।

निष्कर्ष:

अतः हम कह सकते हैं कि आज का साहित्य वर्तमान जीवन की झाँकी है जिसमें मानव मन के चरित्र की व्यापक गहराइयाँ देखने को मिलती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेला नहीं जी सकता है। मनुष्य के बाह्य व आंतरिक संस्कारों, रूचियों में परिष्कार-संवर्धन हुआ जिसे संवेदनात्मक धरातल पर आधुनिक साहित्य ने पहचानने की कोशिश की है। मनुष्य मानवीय संवेदना को ही ग्रहण कर सकता है और उसी से प्रभावित होता है। इसलिए कहा जा सकता है कि साहित्य मानवीय जीवन स्थितियों का प्रतिबिंब है। प्रेम के बाद संवेदना ही मानव मन की सर्वाधिक परित्र भावना है। संवेदना ही मनुष्य को मनुष्य बनाती है। सहानुभूति के दो शब्द किसी के दुःख और कष्ट का निवारण नहीं कर सकते हैं, लेकिन उसके हृदय को सांत्वना तो दे सकते हैं। संवेदना हमें आत्मीयता के प्रगाढ़ बंधन में बाँधती है। वह हमें कोमल अनुभूतियों के भाव-लोक में ले जाती है।

[1] पृ.सं. ३९: डॉ.उषा यादव: हिन्दी की महिला उपन्यासकारों में मानवीय संवेदना

[2] पृ.सं. ५९: मधु कॉंकरिया: पत्ताखोर